णिगोदाणमणुवलंभादो। ण च वणप्फदिकाइएहिंतो पुधभूदा पुढविकाइयादिसु णिगोदा अत्थि त्ति आइरियाणमुवदेसो जेणेदस्स वयणस्स सुत्तत्तं पसज्जदे इदि? एत्थ परिहारो वुच्चदे- होदु णाम तुम्भेहि वुत्तत्थस्स सच्चत्तं, बहुएसु सुत्तेसु वणप्फदीणं उवरि णिगोदपदस्स अणुवलंभादो णिगोदाणमुवरि वणप्फदिकाइयाणं पढणस्सुवलंभादो बहुएहि आइरिएहि संमदत्तादो [1] च। किंतु एदं सुत्तमेव ण होदि त्ति णावहारणं काउं जुत्तं। सो एवं भणदि जो चोद्दसपुव्वधरो केवलणाणी वा। ण वट्टमाणकाले [3] ते अत्थि, ण च तेसिं पासे सोदूणागदा वि संपहि उवलब्भंति। तदो थप्पं काऊण बे वि सुत्ताणि सुत्तासायणभीरूहि आइरिएहि वक्खाणेयव्वाणि त्ति। णिगोदाणमुवरि वणप्फदिकाइया विसेसाहिया होंति बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण, वणप्फदिकाइयाणं उवरि णिगोदा पुण केण विसेसाहिया होंति त्ति भणिदे वुच्चदे। तं जहा- वणप्फदिकाइया त्ति वुत्ते बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदजीवा ण घेत्तव्वा। कुदो ? आधेयादो आधारस्स भेददंसणादो।

कायिक जीवोंसे पृथग्भूत निगोद जीव पाये नहीं जाते। तथा 'वनस्पतिकायिक जीवोंसे पृथग्भूत पृथिवीकायिकादिकोंमें निगोद जीव है' ऐसा आचार्योंका उपदेश भी नहीं है, जिससे इस वचनको सूत्रत्वका प्रसंग हो सके ?

समाधान- यहां उक्त शंकाका परिहार कहते हैं- तुम्हारे द्वारा कहे गये अर्थमें भले ही सत्यता हो, क्योंकि, बहुतसे सूत्रोंमें वनस्पतिकायिक जीवोंके आगे 'निगोद' पद नहीं पाया जाता और निगोद जीवोंके आगे वनस्पतिकायिकोंका पाठ पाया जाता है, और यह कथन बहुतसे आचार्योंसे सम्मत है। किन्तु 'यह सूत्र ही नहीं है' ऐसा निश्चय करना उचित नहीं है। इस प्रकार तो वही कह सकता है जो चौदह पूर्वोंका धारक हो अथवा केवलज्ञानी हो। परन्तु वर्तमान कालमें न तो वे दोनों हैं और न उनके पासमें सुनकर आये हुए अन्य महापुरुष भी इस समय उपलब्ध होते हैं। अत एव सूत्रकी आशातना (छेद या तिरस्कार) से भयभीत रहनेवाले आचार्योंने इस विवादको स्थगित मान कर दोनों ही सूत्रोंका व्याख्यान करना चाहिये।

शंका- निगोद जीवोंके ऊपर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर मात्रसे विशेषाधिक होते हैं, परन्तु वनस्पतिकायिक जीवोंके आगे निगोदजीव किससे विशेषाधिक होते हैं ?

समाधान- ऐसा कहनेपर कहते हैं। तथा- 'वनस्पतिकायिक जीव' ऐसा कहनेपर बादर निगोदोंसे प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जीवोंका ग्रहण नहीं करना चाहिये, क्योंकि, आधेयसे आधारका भेद देखा जाता है।

---

१. मु. प्रतौ वुत्तस्से इति पाठः। २ अ. क. प्रत्योः समुद्दत्तादो इति पाठः।
३. मु. प्रतौ ण च वट्टमाण इति पाठः।

वणप्फदिणामकम्मोदइल्लत्तणेण सव्वेसिमेगत्तमत्थि त्ति भणिदे होदु तेण एगत्तं, किंतु तमेत्थ अविवक्खियं, आहार-अणाहारत्तं चेव विवक्खियं। तेण वणप्फदिकाइएसु[1] बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदा ण गहिदा। वणप्फदिकाइयाणमुवरि 'णिगोदा विसेसाहिया' त्ति भणिदे बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरेहि बादरणिगोदपदिट्ठिदेहि य विसेसाहिया। बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदाणं कधं णिगोदववएसो? ण, आहारे आहेओवयारादो तेसिं णिगोदत्तसिद्धीदो। वणप्फदिणामकम्मोदइल्लाणं सव्वेसिं वणप्फदिसण्णा सुत्ते दिस्सदि। बादरणिगोदपदिट्ठिदअपदिट्ठिदाणमेत्थ सुत्ते वणप्फदिसण्णा किण्ण णिद्दिट्ठा? गोदमो एत्थ पुच्छेयव्वो। अम्हेहि गोदमो बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं वणप्फदिसण्णं णेच्छदि त्ति तस्स अहिप्पाओ कहिओ।

वनस्पति नामकर्मके उदयपनेकी अपेक्षा सबको एकता है ऐसा कहनेपर, उस अपेक्षासे भलेही एकता रहे, परंतु वह यहां विवक्षित नहीं है। यहां आधार और अनाधारकी ही विवक्षा है। इस कारण जो वनस्पतिकायिक जीव है उनमें बादर निगोद प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित जीवोंका ग्रहण नहीं किया गया है। अत: वनस्पतिकायिक जीवोंके ऊपर निगोद जीव विशेष अधिक है ऐसा कहनेपर बादर वनस्पति कायिक प्रत्येक शरीर जीवोंसे तथा बादर निगोद प्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंसे विशेष अधिक है ऐसा समझना चाहिये।

शंका— बादर निगोद प्रतिष्ठित- तथा अप्रतिष्ठित जीवोंको निगोद संज्ञा कैसे घटित होती है?

समाधान— नही, क्योंकि, आधारमें आधेयका उपचार करनेसे उनके निगोदपना सिद्ध होता है।

शंका— वनस्पति नामकर्मके उदयसे संयुक्त जीवोंके 'वनस्पति' संज्ञा सूत्रमें देखी जाती है। बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित जीवोंको यहां सूत्रमें वनस्पति संज्ञा क्यों नहीं निर्दिष्ट की?

समाधान— इस शंकाका उत्तर गौतम गणधरसे पूछना चाहिये। हम तो, गौतम गणधर देव बादरनिगोद प्रतिष्ठित जीवोंको 'वनस्पति' यह संज्ञा इष्ट नही मानते, इसतरह उनका अभिप्राय कहा है।

---

1. अ. क. प्रत्यो: काइका एसु इति पाठ:।

पुणो अण्णेण पयारेण अप्पाबहुगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

सव्वत्थोवा बादरतेउकाइयपज्जत्ता ॥ ७६ ॥

कुदो ? असंखेज्जपदरावलियपमाणत्तादो ।

तसकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

एत्थ गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? असंखेज्जपदरंगुलेहि ओवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

तसकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७८ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो ? तसअपज्जत्तअवहारकालेण तसपज्जत्तअवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागोवलंभादो ।

बादर[1] वणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७९ ॥

गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-पज्जत्तअवहारकालेण तसकाइयअवहारकाले भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

---

फिर भी अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते है-

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव सबमें स्तोक हैं ॥ ७६ ॥

क्योंकि, वे असंख्यात प्रतरावलीप्रमाण हैं।

बादर तेजस्कायिक पर्याप्तकोंसे त्रसकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७७ ॥

यहां गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि वह असंख्यात प्रतरांगुलोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है।

त्रसकायिक पर्याप्तोंसे त्रसकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७८ ॥

यहां गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, त्रस अपर्याप्त जीवोंके अवहार-कालसे त्रस पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको भाजित करनेपर आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है।

त्रसकायिक अपर्याप्तोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७९ ॥

यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे त्रसकायिक जीवोंके अवहारकालको भाजित

---

१. मु. प्रतौ बादर इति पाठो नास्ति ।

भागुवलंभादो ।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

बादरणिगोदजीवणिद्देसो किमट्ठं कुदो, बादरणिगोदपदिट्ठिदा त्ति वत्तव्वं ? ण, बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं णिगोदजीवाधाराणं[1] सयं पत्तेयसरीराणमुवयारबलेण णिगोद-जीवसण्णा एत्थ होदु त्ति जाणावणट्ठं कदो[2]। गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कुदो? बादरणिगोदपदिट्ठिदअवहारकालेण बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअवहारकाले भागे हिदे अवलियाए असंखेज्जदिभागुवलंभादो ।

बादरपुढविकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८१ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं ।

करनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंसे बादर निगोदजीव निगोद-प्रतिष्ठित पर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ८० ॥

शंका— 'बादर निगोद जीव पदका निर्देश किस लिये किया, बादर-निगोद-प्रतिष्ठित' इतना ही पद कहना चाहिये ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो स्वयं तो प्रत्येक शरीर हैं, किन्तु निगोदजीवोंके आधारभूत प्रत्येकशरीर ऐसे बादर निगोदजीवोंसे प्रतिष्ठित हैं उन जीवोंको यहां उपचारके बलसे 'निगोदजीव' संज्ञा हो इस बातके ज्ञापनार्थ 'बादर निगोदजीव' पदका निर्देश किया है। गुणकार यहां आवलीका असंख्यातवां भाग है, क्योंकि, बादर-निगोद-प्रतिष्ठित जीवोंके अव-हारकालसे बादर-वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अवहारकालको भाजित करनेपर आव-लीका असंख्यातवां भाग उपलब्ध होता है ।

बादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८१ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। कारण पहिलेके समान कहना चाहिये ।

---

१. अ. क. प्रत्योः '-जीवाधारणं' इति पाठः ।

२. अ. क. प्रत्योः कुदो इति पाठः ।

बादरआउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८२ ॥

गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं।

बादरवाउकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

गुणगारो असंखेज्जाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ। हेट्ठिमरासिणा उवरिमरासिमोवट्टिय सव्वत्थ गुणगारो उप्पाएदव्वो।

बादरतेउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा। गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ सागरोवम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणयं।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥८५॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा। गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे बादर अप्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८२ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है। कारण पहिलेके समान कहना चाहिये।

बादर अप्कायिक पर्याप्तोंसे बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८३ ॥

यहां गुणकार प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात जगश्रेणी है। अधस्तन राशिसे उपरिम राशिका अपवर्तन कर सर्वत्र गुणकार उत्पन्न करना चाहिये।

बादर वायुकायिक पर्याप्तोंसे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८४ ॥

यहां गुणकार असंख्यात लोक है। गुणकारकी अर्द्धच्छेदशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भागसे हीन सागरोपमप्रमाण हैं।

बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८५ ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है। गुणकारकी अर्द्धच्छेदशलाकायें पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं।

बादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८६ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरआउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादरवाउअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८९ ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे निगोदप्रतिष्ठित बादर निगोदजीव अपर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ८६ ॥

यहां गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भाग-प्रमाण हैं ।

निगोदप्रतिष्ठित बादर निगोद जीव अपर्याप्तोंसे बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८७ ॥

गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भाग-प्रमाण हैं ।

बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे बादर अप्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यात-गुणे हैं ॥ ८८ ॥

गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भाग-प्रमाण हैं ।

बादर अप्कायिक अपर्याप्तोंसे बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८९ ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनके अर्द्धच्छेद पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ९० ॥

गुणगारपमाणमसंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि वि असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९२ ॥

केत्तियो विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९३ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयाणमसंखेज्जदिभागो । तेसिं को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

बादर वायुकायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ९० ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९१ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९२ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अप्कायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९३ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक है । उनका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सुहुमतेउकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ ९४ ॥

एत्थ गुणगारो तप्पाओग्गसंखेज्जसमया ।

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९५ ॥

विसेसपमाणसंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९६ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जविभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवाउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ९७ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहुमआउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जविभागो । को पडिभागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ ९४ ॥

यहां गुणकार तत्प्रायोग्य संख्यात समय है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्तोंसे सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९५ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक है । प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग असंख्यात लोक है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९६ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक हैं । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्तोंसे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ९७ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यात लोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

---

१. मु. प्रतौ पडिभागो इति पाठः ।

अकाइया अणंतगुणा ॥ ९८ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो । कुदो ? सुहुमवाउकाइयपज्जत्तेहि ओवट्टिदअकाइयपमाणत्तादो ।

बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता अणंतगुणा ॥ ९९ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो । कुदो ? सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणहीणेहि अकाइएहि असंखेज्जलोगगुणेहि ओवट्टिदसव्वजीवरासिपमाणत्तादो ।

बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १०० ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

बादरवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयपज्जत्तमेत्तो ।

सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तोंसे अकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ९८ ॥

गुणकार कितना है ? अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा हैं, क्योंकि, वह सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीवोंसे अपवर्तित अकायिक जीवोंके बराबर है ।

अकायिक जीवोंसे बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ९९ ॥

यहां गुणकार अभव्यसिद्धिक जीवों, सिद्धों और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे अनन्तगुणे हीन अकायिकोंसे असंख्यात लोकगुणी राशिसे अपवर्तित सर्व जीवराशिप्रमाण है ।

बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीन असंख्यातगुणे हैं ॥ १०० ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण है ।

बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे बादर वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०१ ॥

विशेष कितना है ? विशेषका प्रमाण बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १०२ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १०३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तमेत्तो ।

वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइयमेत्तो । बादरवणप्फदिकाइएसु बादरणिगोदपदिट्ठिदापदिट्ठिदा[1] ण अत्थि, तेसिं वणप्फदिकाइयववएसाभावादो ।

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ १०६ ॥

बादर वनस्पतिकायिकोंसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १०२ ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १०३ ॥

गुणकार कितना है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०४ ॥

विशेष कितना है ? विशेषका प्रमाण सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०५ ॥

विशेष कितना है ? विशेषका प्रमाण बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके बराबर है । बादर वनस्पतिकायिक जीवोंमें बादर-निगोद-प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित जीव गृहीत नहीं हैं, क्योंकि, उनके 'वनस्पतिकायिक' संज्ञाका अभाव है ।

वनस्पतिकायिकोंसे निगोद जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०६ ॥

---

१. अ. स. प्रत्योः णिगोदपदिट्ठिदा इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? बादरवणप्फदिकाइय[1]पत्तेयसरीरेहि बादरणिगोदपदिट्ठिदेहि य ।

जोगाणुवादेण सव्वत्थोवा मणजोगी ॥ १०७ ॥

कुदो ? देवाणं संखेज्जदिभागप्पमाणत्तादो ।

वचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १०८ ॥

कुदो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण वचिजोगिअवहारकालेण संखेज्जपदरंगुलमेत्ते मणजोगिअवहारकाले भागे हिदे संखेज्जरूवोवलंभादो ।

अजोगी अणंतगुणा ॥ १०९ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

विशेष कितना है ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवोंसे विशेष अधिक हैं । (देखो पृ. ५४१)

योगमार्गणाके अनुसार मनोयोगी जीव सबमें स्तोक हैं ।। १०७ ।।

क्योंकि, वे देवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ।

मनोयोगियोंसे वचनयोगी जीव संख्यातगुणे हैं ।। १०८ ।।

क्योंकि, प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण वचनयोगि-अवहारकालसे संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण मनोयोगि - अवहारकालको भाजित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं।

वचनयोगियोंसे अयोगी जीव अनन्तगुणे हैं ।। १०९ ।।

गुणकार कितना है ? अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

---

१. मु. वणप्फदिपत्तेय इति पाठः ।

कायजोगी अणंतगुणा ॥ ११० ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहिंतो सिद्धेहिंतो सव्वजीवपढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो। अण्णेण पयारेण जोगप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगी ॥ १११ ॥

सुगमं ।

आहारकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११२ ॥

को गुणगारो ? दोण्णि रूवाणि ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी असंखेज्जगुणा ॥ ११३ ॥

गुणगारो जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो ।

सच्चमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११४ ॥

कुदो ? विस्ससादो ।

अयोगियोंसे काययोगी अनन्तगुणे हैं ॥ ११० ॥

गुणकार अभव्यसिद्धिकों, सिद्धों और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है। अब अन्य प्रकारसे योगमार्गणाकी अपेक्षा अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं–

आहारमिश्रकाययोगी सबमें स्तोक हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमिश्रकाययोगियोंसे आहारकाययोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११२ ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार दो रूप है ।

आहारकाययोगियोंसे वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंख्यातगुणे हैं ॥ ११३ ॥

गुणकार जगप्रतरका असंख्यातवां भाग है ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंसे सत्यमनोयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११४ ॥

क्योंकि, ऐसा स्वभावसे है ।

मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११५ ॥

कुदो ? सच्चमणजोगअद्धादो मोसमणजोगअद्धाए संखेज्जगुणत्तादो सच्चमणजोगपरिणमणवारेहिंतो मोसमणजोगपरिणमणवाराणं संखेज्जगुणत्तादो वा ।

सच्च-मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११६ ॥

एत्थ पुव्वं व दोहि पयारेहि संखेज्जगुणत्तस्स कारणं वत्तव्वं ।

असच्च-मोसमणजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११७ ॥

एत्थ वि पुव्विल्लं दुविहकारणं वत्तव्वं ।

मणजोगी विसेसाहिया ॥ ११८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सच्च-मोस-सच्चमोसमणजोगिमेत्तो विसेसो ।

सच्चवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ ११९ ॥

कारणं ? मणजोगिअद्धादो वचिजोगिअद्धाए संखेज्जगुणत्तादो मणजोगवारेहिंतो सच्चवचिजोगवाराणं संखेज्जगुणत्तादो वा ।

सत्यमनोयोगियोंसे मृषामनोयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११५ ॥

क्योंकि, सत्यमनोयोगके कालकी अपेक्षा मृषामनोयोगका काल संख्यातगुणा है, अथवा सत्यमनोयोगके परिणमनवारोंकी अपेक्षा मृषामनोयोगके परिणमनवार संख्यातगुणे हैं ।

मृषामनोयोगियोंसे सत्य-मृषामनोयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११६ ॥

यहां पूर्वके समान दोनों प्रकारोंसे संख्यातगुणपनेका कारण कहना चाहिये ।

सत्य-मृषामनोयोगियोंसे असत्य-मृषामनोयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११७ ॥

यहां भी पूर्वोक्त दोनों प्रकारका कारण कहना चाहिये ।

असत्य-मृषामनोयोगियोंसे मनोयोगी विशेष अधिक हैं ॥ ११८ ॥

विशेष कितना है ? सत्य, मृषा और सत्य-मृषा मनोयोगियोंके बराबर है ।

मनोयोगियोंसे सत्यवचनयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ ११९ ॥

क्योंकि, मनोयोगिकालसे वचनयोगिकाल संख्यातगुणा है, अथवा मनोयोगवारोंसे सत्यवचनयोगवार संख्यातगुणे हैं ।

मोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२० ॥

एत्थ वि पुव्वं दुविहकारणं वत्तव्वं ।

सच्चमोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२१ ॥

एत्थ वि तं चेव कारणं ।

वेउव्वियकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२२ ॥

कुदो ? मण-वचिजोगद्धाहितो[1] कायजोगद्धाए संखेज्जगुणत्तादो ।

असच्चमोसवचिजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२३ ॥

कुदो ? बीइंदियपज्जत्तजीवाणं गहणादो ।

वचिजोगी विसेसाहिया ॥ १२४ ॥

केत्तियमेत्तेण ? सच्च-मोस-सच्चमोसवचिजोगिमेत्तेण ।

अजोगी अणंतगुणा ॥ १२५ ॥

को गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

सत्यवचनयोगियोंसे मृषावचनयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२० ॥

यहां भी पहलेके समान दोनों प्रकारका कारण कहना चाहिये ।

मृषावचनयोगियोंसे सत्य-मृषावचनयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२१ ॥

यहां भी वही पूर्वोक्त कारण है ।

सत्य-मृषावचनयोगियोंसे वैक्रियिककाययोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२२ ॥

क्योंकि, मन वचनयोगकालोंसे काययोगकाल संख्यातगुणा है ।

वैक्रियिककाययोगियोंसे असत्य-मृषावचनयोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२३ ॥

क्योंकि, यहां द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका ग्रहण किया गया है ।

असत्य-मृषावचनयोगियोंसे वचनयोगी विशेष अधिक हैं ॥ १२४ ॥

कितने मात्र विशेषसे अधिक हैं ? सत्य, मृषा और सत्यमृषा वचनयोगिमात्र-विशेषसे अधिक हैं ।

वचनयोगियोंसे अयोगी अनन्तगुणे हैं ॥ १२५ ॥

गुणकार कितना है ? अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

---

१ अ. क.प्रत्योः तीहंदिय इति पाठः ।

कम्मइयकायजोगी अणंतगुणा ॥ १२६ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहितो सिद्धेहितो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो वि अणंतगुणो। कुदो? अंतोमुहुत्तगुणिदअजोगिरासिपमाणेणोवट्टिदसव्वजीवरासिमेत्तादो।

ओरालियमिस्सकायजोगी असंखेज्जगुणा ॥ १२७ ॥

को गुणगारो ? अंतोमुहुत्तं ।

ओरालियकायजोगी संखेज्जगुणा ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

कायजोगी विसेसाहिया ॥ १२९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? सेसकायजोगिमेत्तो ।

वेदाणुवादेण सव्वत्थोवा पुरिसवेदा ॥ १४० ॥

कुदो ? असंखेज्जपदरंगुलोवट्टिदजगपदरप्पमाणत्तादो ।

इत्थिवेदा संखेज्जगुणा ॥ १३१ ॥

अयोगियोंसे कार्मणकाययोगी अनन्तगुणे हैं ॥ १२६ ॥

गुणकार कितना है ? अभव्यसिद्धिकों, सिद्धों और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा है, क्योंकि, वह अन्तर्मुहूर्तसे गुणित अयोगिराशिप्रमाणसे अपवर्तित सर्व जीवराशि-प्रमाण है।

कार्मणकाययोगियोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी असंख्यातगुणे हैं ॥ १२७ ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

औदारिककाययोगियोंसे काययोगी विशेष अधिक हैं ॥ १२९ ॥

विशेष कितना है ? शेष काययोगिप्रमाण है।

वेदमार्गणाके अनुसार पुरुषवेदी सबसे स्तोक हैं ॥ १३० ॥

क्योंकि, वे असंख्यात प्रतरांगुलोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण हैं।

पुरुषवेदियोंसे स्त्रीवेदी संख्यातगुणे हैं ॥ १३१॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

अवगदवेदा अणंतगुणा ॥ १३२ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो ।

णवुंसयवेदा अणंतगुणा ॥ १३३ ॥

को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहितो सिद्धेहितो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणो ।

वेदमग्गणाए अण्णेण पयारेण अप्पाबहुअपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पयदं । सव्वत्थोवा सण्णिणवुंसयवेद-गब्भोवक्कंतिया ॥ १३४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलेहि जगपदरम्मि भागे हिदे सण्णि-णवुंसयवेदगब्भोवक्कंतिया जेण होंति तेण थोवा ।

सण्णिपुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १३५ ॥

गुणकार कितना है ? संख्यात समयप्रमाण है ।

स्त्रीवेदियोंसे अपगतवेदी अनन्तगुणे हैं ॥ १३२ ॥

गुणकार कितना ? अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है ।

अपगतवेदियोंसे नपुंसकवेदी अनन्तगुणे हैं ॥ १३३ ॥

गुणकार कितना ? अभव्यसिद्धिकों, सिद्धों और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे अनन्तगुणा है ।

वेदमार्गणामें अन्य प्रकारसे अल्पबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

यहां पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनि जीवोंका अधिकार है । संज्ञी नपुंसकवेदी गर्भोपक्रान्तिक जीव सबसे स्तोक हैं ॥ १३४ ॥

चूंकि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग देनेपर संज्ञी नपुंसकवेदी गर्भोपक्रान्तिक जीवोंका प्रमाण होता है, अत एव वे स्तोक हैं ।

संज्ञी नपुंसक गर्भोपक्रान्तिकोंसे संज्ञी पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिक जीव संख्यातगुणे ॥ १३५ ॥

कुदो सण्णीसु गब्भजेसु णवुंसयवेदाणं पाएण संभवाभावादो ।

सण्णिइत्थिवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १३६ ॥

कुदो ? सण्णिगब्भजेसु पुरिसवेदएहिंतो बहुआणं इत्थिवेदयाणमुवलंभादो ।

सण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १३७ ॥

कुदो ? सण्णिगब्भजेहिंतो सण्णिसम्मुच्छिमाणं संखेज्जगुणत्तादो । सम्मुच्छिमेसु इत्थि-पुरिसवेदा णत्थि । कुदोवगम्मदे ? इत्थि-पुरिसवेदाणं सम्मुच्छिमाधियारे अप्पाबहुगपरूवणाभावादो ।

सण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १३८ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । कुदो वगम्मदे ? परमगुरुवदेसादो ।

क्योंकि, संज्ञी गर्भजोंमें नपुंसकवेदियोंकी प्राय: सम्भावना नहीं है ।

संज्ञी पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिकोंसे संज्ञी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिक जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १३६ ॥

क्योंकि, संज्ञी गर्भजोंमें पुरुषवेदियोंसे स्त्रीवेदी जीव बहुत पाये जाते हैं ।

संज्ञी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रातिक्कोंसे संज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्च्छिम पर्याप्त संख्यातगुणे हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि, संज्ञी गर्भजोंसे संज्ञी सम्मूर्च्छिम जीव संख्यातगुणे है । सम्मूर्च्छिम जीवोंमें स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी नहीं हैं ।

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— सम्मूर्च्छिमाधिकारमें स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंके अल्पबहुत्वका प्ररूपण न करनेसे जाना जाता है ।

संज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्च्छिम पर्याप्तोंसे संज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्च्छिम अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १३८ ॥

गुणकार कितना है आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ।

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

सण्णिइत्थि-पुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया असंखेज्जवासाउआ दो वि तुल्ला असंखेज्जगुणा ॥ १३९ ॥

कधं दोण्हं समाणत्तं ? असंखेज्जवासाउएसु इत्थि-पुरिसजुगलाणं चेव समुप्पत्तीदो । णवुंसयवेदा सम्मुच्छिमा च असण्णिणो च सुविणंतरे वि ण तत्थ संभवंति, अच्चंताभावेण अवहत्थियत्तादो । एत्थ गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो वगम्मदे ? आइरियपरंपरागयउवएसादो । एदम्हादो अइक्कंतरासीणं सव्वेसि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपदरंगुलाणि जगपदरभागहारो होदि । एत्थ पुण संखेज्जाणि पदरंगुलाणि भागहारो ।

असण्णिणवुंसयवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४० ॥

कुदो ? णोइंदियावरणखओवसमस्स पंचिदिएसु बहुआणमसंभवादो ।

असण्णिपुरिसवेदा गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४१ ॥

संज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्छिम अपर्याप्तोंसे संज्ञी स्त्रीवेदी व पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिक असंख्यातवर्षायुष्क दोनों ही तुल्य होकर असंख्यातगुणे हैं ॥ १३९ ॥

शंका—दोनोंके समानता कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्कोंमें स्त्री-पुरुष युगलोंकी ही उत्पत्ति होती है । नपुंसकवेदी, सम्मूर्छिम व असंज्ञी जीव स्वप्नमें भी वहां सम्भव नहीं हैं, क्योंकि, उनका अत्यन्ताभाव होनेसे उनका निराकरण किया है । यहां गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—यह आचार्यपरम्परासे आये हुए उपदेशसे जाना जाता है ।

इससे अतिक्रान्त सब राशियोंका जगप्रतरभागहार पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र प्रतरांगुलप्रमाण होता है । किन्तु यहां संख्यात प्रतरांगुल भागहार है ।

उपर्युक्त जीवोंसे असंज्ञी नपुंसकवेदी गर्भोपक्रान्तिक संख्यातगुणे हैं ॥ १४० ॥

क्योंकि, नोइन्द्रियावरणका क्षयोपशम पंचेन्द्रियोंमें बहुतोंके नहीं होता ।

असंज्ञी नपुंसकवेदी गर्भोपक्रान्तिकोंसे असंज्ञी पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिक संख्यातगुणे हैं ॥ १४१ ॥

---

१ मु. प्रतौ: सव्वासी इति पाठः ।

सुगममेदं ।

असण्णिइत्थिवेदा[1] गब्भोवक्कंतिया संखेज्जगुणा ॥ १४२ ॥

असंखेज्जवासाउअइत्थि-पुरिसवेदरासिप्पहुडि जाव असण्णिइत्थिवेदगब्भोवक्कंतियरासि त्ति ताव जगपदरभागहारो संखेज्जाणि पदरंगुलाणि । सेसं सुगमं ।

असण्णी णवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १४३ ॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया । एत्थ जगपदर भागहारो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो ।

असण्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १४४ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

कसायाणुवादेण सव्वत्थोवा अकसाई ॥ १४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिकोंसे असंज्ञी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिक संख्यातगुणे हैं ॥ १४२ ॥

असंख्यातवर्षायुष्क स्त्री-पुरुषवेदराशिसे लेकर असंज्ञी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिक राशि तक जगप्रतरका संख्यात प्रतरांगुल हैं । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

असंज्ञी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिकोंसे असंज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्छिम पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १४३ ॥

गुणकार कितना है ? संख्यात समयगुणकार है । यहां जगप्रतरका भागहार प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग है ।

असंज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्छिम पर्याप्तोंसे असंज्ञी नपुंसकवेदी सम्मूर्छिम अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १४४ ॥

गुणकार कितना है ? आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

कषायमार्गणाके अनुसार कषायरहित जीव सबमें स्तोक हैं ॥ १४५ ॥

---

१ अ. आ. प्रत्योः असण्णिइत्थिपुरिसवेदा इति पाठः

सुगममेदं।

माणकसाई अणंतगुणा ॥ १४६ ॥

गुणगारो सव्वजीवाणं पढमवग्गमूलादो अणंतगुणो[1]। सेसं सुगमं।

कोधकसाई विसेसाहिया ॥ १४७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? अणंतो माणकसाईणं असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? आवलियाए असंखेज्जदिभागो।

मायकसाई विसेसाहिया ॥ १४८ ॥

एत्थ विसेसपमाणं पुव्वं व वत्तव्वं।

लोभकसाई विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

सुगमं।

णाणाणुवादेण[2] सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणी ॥ १५० ॥

कुदो? संखेज्जत्तादो।

यह सूत्र सुगम है।

कषायरहित जीवोंसे मानकषायी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १४६ ॥

गुणकार सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे अनन्तगुणा है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

मानकषायियोंसे क्रोधकषायी जीव विशेष अधिक हैं ॥ १४७ ॥

विशेष कितना है? मानकषायी जीवोंका असंख्यातवां भाग होकर अनन्तप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है।

क्रोधकषायियोंसे मायाकषायी जीव विशेष अधिक हैं ॥ १४८ ॥

यहां विशेषका प्रमाण पूर्वके समान कहना चाहिये।

मायाकषायियोंसे लोभकषायी विशेष अधिक हैं ॥ १४९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मनःपर्ययज्ञानी सबमें स्तोक हैं ॥ १५० ॥

क्योंकि, वे संख्यात हैं।

---

१ मु. प्रती अणंतगुणा इति पाठः। २ अ. प्रती णाणाणुवादेण इति पाठः।